"कलि तारक सतिगुरु नानक"

• सुणी पुकार दातार प्रभ गुरु नानक जग माहि पठाइआ ।
कलि तारणि गुरु नानक आइआ ।

अर्थ:- ढोल की पुकार सुनकर, धर्मस्वरूप, दानदाता प्रभु परमेश्वर ने जगत कल्याण के लिए जग संसार में गुरु नानक साहिब को भेजा । यह उस अविनाशी परमेश्वर की लीला है, जो निराकार स्वरूप में आदेश देता है और गुरु नानक स्वरूप में आदेश स्वीकार करते हैं । उन्होंने जगत को यह समझाने के लिए दो रूप बनाए हैं । कलियुग में गुरु नानक साहिब जगत के कल्याण के लिए संसार में आये और चले गये ।

पहिला बाबे पाया बखस दरि पिछो दे फिरि घालि कमाई ।
रेत अक आहार करि रोड़ा की गुर कीअ विछाई ।

अर्थः- गुरु नानक देव जी बेईं नदी का बहाना बनाकर सचखंड गए, ईश्वर की दरगाह से आशीर्वाद प्राप्त किया और फिर बाद में भक्ति के लिए कड़ी मेहनत की और फिर कठोर तपस्या की और रेत और आक खाया और आराम को छोड़कर गुरु साहिब ने "कैकरन की" राह बनाई । फिर, कठोर तपस्या करने और रेत और बबूल खाने और आराम को त्यागने के बाद, गुरु साहिब ने उपरोक्त श्लोक में "कैकरन की" (जिसका अर्थ है "रेत और बबूल खाया") का मार्ग प्रशस्त किया ।

भारी करी तपसिआ वड़े भागि हरि सिउ बणि आई । बाबा पैधा सचि खडि नउ निधि नाम गरीबी पाई ।

अर्थः- उसने घोर तप और कठोर तपस्या की अर्थात् रजोगुण और सत्यगुण से युक्त होकर तपस्या की इस कारण महान और उत्तम कर्म करके वह भगवान के समीप हो गया अर्थात सृष्टिकर्ता ने भी उससे मेल कर लिया और उसकी सेवा स्वीकार कर ली । भगवान उस सेवा से प्रसन्न हुए बाबा गुरु नानक साहिब जी ने वहाँ अविनाशी परमात्मा के द्वार पर सच्चे ईश्वर के सच्चे धाम को प्राप्त किया । अविनाशी परमात्मा से आशीर्वाद स्वरूप उन्हें नौ प्रकार की सम्पत्ति, नाम का खजाना, अठारह प्रकार की सिद्धियाँ तथा मूल - मंत्र के रूप में नाम और दरिद्रता का वरदान प्राप्त हुआ ।

बाबा देखे धिआन धरि जलती सभि प्रिथवी दिसि आई ।
बाझहु गुर गुबार है है है करदी सुणी लुकाई ।

अर्थः- हे, जब मैंने इस स्थिति पर ध्यान दिया, तो मुझे पृथ्वी, जगत जननी के सभी प्राणियों की स्थिति काम, क्रोध और घृणा की अग्नि में जलती हुई दिखाई दी । मैंने इसमें वह दृश्य, वह गीत की ध्वनि देखी,

हे, यह क्यों जल रहा है ? गुरु के बिना अज्ञान का घना अंधकार है । इसीलिए यह गुप्त जगत कराह रहा है । पूर्ण गुरु के बिना अज्ञान का घना अंधकार है । इसीलिए गुप्त जगत कराहता सुनाई देता है ।

बाबे भेख बणाइआ उदासी की रीति चलाई । चढ़िआ सोधणि धरति लुकाई ।24।

अर्थः- बाबा गुरु नानक साहिब ने उदासी भेख पोशाक को उदासी कुलीनता के साथ बनाया, फिर उन्होंने उदासी भेख प्रथा और शिष्टाचार, दुनिया में रहने और सोने को बनाया । यहां यह साबित होता है कि उदासी पंथ की शुरुआत स्वयं गुरु नानक साहिब ने की थी दो से अधिक चादरें न रखना, एक बिछाने के लिए, एक ओढ़ने के लिए । गती (बिना सिलाई) कपड़े से शरीर को ढकने की प्रथा को गती कहा जाता है । एक गर्दन के चारों ओर डेढ़ गज लंबा परना पहनना और यह उदासी का प्राथमिक रिवाज था, जिसे गुरु जी ने स्वयं अपनाया था । गुरु नानक साहिब जी गुप्त सृष्टि को परिष्कृत और सुधारने के लिए अर्थात संसार को बचाने के लिए पृथ्वी पर अवतरित हुए ।

- चरन धोई रहरासि करि चरणामृत सिखां पीलाइआ ।

पारब्रहम पूरन ब्रहम कलिजुग अंदरि इक दिखाइआ ।

अर्थः- गुरु साहिब ने पाठ की रस्म पूरी करने के बाद दाहिने पैर के अंगूठे को धोया और फिर चरणामृत सिखों को अर्पित किया । उन्होंने दिखाया अर्थात उन्होंने लोगों को अनेक कर्मकाण्डों, पूजा - पाठ आदि में उलझाकर एक ईश्वर का नाम स्थापित किया ।

चारे पैर धरम दे चारि वरनि इक वरन कराइआ । राणा रंक बराबरी पैरी पवणा जगि वरताइआ ।

अर्थः- उन्होंने धर्म के चारों स्तंभों सत्य, यज्ञ, उपासना, दान का सार एक नाम में प्रकट किया और चारों वर्णों को नाम जपने का समान अधिकार दिया । उन्होंने जातियों के भेद मिटाकर भक्ति और एकता के मार्ग पर चलने वाले शुद्ध संप्रदाय की स्थापना की । राणा ने छोटे राजाओं, गरीब और अमीर को समान बनाया, यानी अमीर और गरीब को एक समान बनाया और दुनिया में विनम्रता का गुण पेश किया और दुनिया को गरीबों की पूजा करना सिखाया ।

उलटा खेल पिरंम दा पैरा उपरि सीस निवाइआ । कलिजुग बाबे तारिआ सतिनाम पढ़ि मंत्र सुणाइआ ।23। (गुरुदास-वारा)

अर्थः- प्यारे भगवान की उलटी लीला तो देखो कि वे पैरों से ऊपर हैं, उन्हें झुका दिया है अर्थात संसार को विनम्रता से झुकने का पाठ पढ़ाया है । कलियुग में बाबा गुरु नानक देव जी ने शाश्वत ईश्वर के सच्चे नाम मंत्र का जाप किया और संसार के प्राणियों का उद्धार किया ।

- प्रथमे मिटिआ तन का दूख । मन सगल कउ होआ सूख । करि किरपा गुर दीनो नाउ । बलि बलि तिस सतिगुर कउ जाउ ।1।

अर्थः- हे भाई ! गुरु को मिल के सबसे पहले मेरे शरीर के हरेक दुख मिट गए, फिर मेरे मन को पूर्ण आनंद प्राप्त हुआ । गुरु ने कृपा करके मुझे परमात्मा का नाम दिया । हे भाई ! मैं उस गुरु से सदा कुर्बान जाता हूँ सदके जाता हूँ ।

गुर पूरा पाइओ मेरे भाई । रोग सोग सभ दूख बिनासे सतिगुर की सरणाई । रहाउ।

अर्थः- हे मेरे भाई ! जब से मुझे पूरा गुरु मिला है गुरु की शरण पड़ के मेरे सारे रोग सारी चिन्ता फिक्र सारे दुख नाश हो गए हैं ।

गुर के चरन हिरदै वसाए । मन चिंतत सगले फल पाए ।
अगनि बुझी सभ होई साति । करि किरपा गुर कीनी दाति ।2।

अर्थः- हे भाई ! जब से मैंने गुरु के चरण अपने हृदय में बसाए हैं मुझे सारे मन इच्छित फल मिल रहे हैं मेरे अंदर से तृष्णा की आग बुझ गई है मेरे अंदर पूरी ठंड पड़ गई है । ये सारी दाति गुरु ने ही मेहर करके दी है ।

निथावे कउ गुरि दीनो थान । निमाने कउ गुरि कीनो मान ।
बंधन काटि सेवक करि राखे । अंमृत बानी रसना चाखे ।3।

अर्थः- मुझे पहले कोई आसरा नहीं मिलता था । गुरु ने मुझे अपने चरणों में जगह दी, मुझ निमाणे को गुरु ने आदर दिया है, मेरे माया के मोह के बंधन काट के मुझे गुरु ने अपना सेवक बना के अपने चरणों में टिका लिया, अब मेरी जीभ आत्मिक जीवन देने वाली महिमा की वाणी का रस चखती रहती है ।

वडै भागि पूज गुर चरना । सगल तिआगि पाई प्रभ सरना ।
गुर नानक जा कउ भइआ दइआला । सो जन होआ सदा निहाला ।4। (5-395-396)

अर्थः- हे भाई ! बड़ी किस्मत से मुझे गुरु के चरणों की पूजा का अवसर मिला जिसकी इनायत से मैं और सारे आसरे छोड़ के प्रभु की शरण में आ पड़ा हूँ । हे नानक ! कह जिस मनुष्य पर गुरु दयावान हो जाता है वह मनुष्य आत्मिक आनंद पाता है ।

- गुर की महिमा किआ कहा गुरु बिबेक सत सर । ओह आदि जुगाद जुगह जुग पूरा परमेसर ।3।

अर्थः- हे भाई ! मैं ये बताने योग्य नहीं हूँ कि गुरु कितना बड़ा कितना महान, कितनी उच्च आत्मा है, गुरु विवेक का सरोवर है गुरु उच्च आचरण का सरोवर है, गुरु उस पूरन परमेश्वर का रूप है जो सबका आदि है जो जुगों के आदि से है जो हरेक युग में मौजूद है ।

नाम धिआवहु सद सदा हरि हरि मन रंगे । जीउ प्राण धन गुरु है नानक कै संगे ।4। (5-397)

अर्थः- हे भाई ! सदा ही परमात्मा का नाम स्मरण करते रहो, अपने मन को परमात्मा के प्रेम रंग से रंगे रखो ये नाम मिलना गुरु से ही है, वह गुरु मुझ नानक के अंग - संग बसता है, गुरु ही मेरी जिंद है गुरु ही मेरे प्राण हैं, गुरु ही मेरा धन है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगंधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"